एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 04, अंक: 05 (सितंबर-अक्टूबर, 2024)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

भिण्डी के कीट एवं उनका एकीकृत प्रबंधन

(*हीनाश्री मैन्शन, सुनील कुमार धाभाई, गौरांग छंगाणी एवं तारा यादव)
कीट विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय जोधपुर, कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर
*संवादी लेखक का ईमेल पता: heenashreem@gmail.com

भिण्डी (*एबेलमोशस एस्कुलेंटस*) उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में उगाई जाने वाली एक वार्षिक फसल है जो कि मध्यम जलवायु वाली निचली पहाड़ियों में उगाई जाती हैं। इसके कोमल, हरे फलों को करी और सूप में उपयोग किया जाता है इसमे लगने वाले प्रमुख कीट फल और तना छेदक (*इरियास विटेला*), तेला (*अमरस्का बिगुत्तुला बिगुत्तुला इशिदा*), फल छेदक (*हेलीकोवर्पा आर्मीगेरा* हब), सफ़ेद मक्खी (*बेमिसिया तबसी* गेनाडियस), सेमीलूपर (*एनोमिस फ्लेवा* एफ.), लाल कपास कीट (*डिस्डरकस सिंगुलेटस*), ब्लिस्टर बीटल (*माइलाब्रिस पस्टुलता* थंब), फल और तना छेदक, हरा तेला और सफेद मक्खी है, जो कि सामान्य 40% नुकसान पहुचाते है।

भिण्डी के कीट

1. भिण्डी का प्ररोह एवं फल छेदक

लक्षण: इस कीट का प्रकोप वर्षा ऋतु में अधिक होता है। प्रारंभिक अवस्था में इल्ली कोमल तने में छेद करती है जिससे पौधे का तना एवं शीर्ष भाग सूख जाता है। फूलों पर इसके आक्रमण से फूल लगने के पूर्व गिर जाते है इसके बाद फल में छेद बनाकर अंदर घुसकर आन्तरिक भाग को खाती है। इससे ग्रसित फल मुड़ जाते हैं और भिण्डी खाने योग्य नहीं रहती है।

प्रबंधन

- फल छेदक की निगरानी के लिये 5 फेरोमोन ट्रैप प्रति हेक्टेयर लगायें।
- क्षतिग्रस्त पौधो के तनो तथा फलो को एकत्रित करके नष्ट कर देना चाहिए।

- मकड़ी एवं परभक्षी कीटों के विकास या गुणन के लिये मुख्य फसल के बीच-बीच में और चारों तरफ बेबीकॉर्न लगायें जो कि बर्ड पर्च का भी कार्य करती है।
- फल छेदक के नियत्रंण के लिये *ट्राइकोग्रमा काइलोनिस* एक लाख प्रति हक्टयेर की दर से 2-3 बार उपयोग करें तथा साइपरमेथ्रिन (4 मि.ली./10 ली.) या इमामेक्टिन बेन्जोएट (2 ग्रा./10 ली0) या स्पाइनोसैड (3 मि.ली./10 ली.) का छिड़काव करें।
- क्लोरपायरिफॉस 20 प्रतिशत ई.सी. अथवा प्रोफेनफॉस 50 प्रतिशत ई.सी. की 5 मिलीमात्रा प्रति लीटर पानी के मान से छिडकाव करें तथा आवश्यकतानुसार छिडकाव को दोहराएं।

2. भिण्डी का फुदका या तेला

लक्षण: इस कीट का प्रकोप पौधो के प्रारम्भिक अवस्था के समय होता है। शिशु एवं वयस्क पौधे की पत्तियों की निचली सतह से रस चूसते हैं, जिसके कारण पत्तियां पीली पड़ जाती हैं और अधिक प्रकोप होने पर मुरझाकर सूख जाती हैं।

प्रबंधन

- नीम की खली 250 कि.ग्रा. प्रति हेक्टयेर की दर से अंकुरण के तुरंत मिट्टी मे मिला देना चाहिए तथा बुआई 30 दिन बाद फिर मिला देना चाहिए
- बुआई के समय कार्बोफयुराँन 3जी 1 कि.ग्रा. प्रति हेक्टयेर की दर से मिट्टी मे मिलाने इस कीट का काफी हद तक नियंत्रण होता है।

3. भिंडी की सफेद मक्खी

लक्षण: ये सूक्ष्म आकार के कीट होते है तथा इसके शिशु एवं प्रौढ पत्तियों कोमल तने एवं फल से रस को चूसकर नुकसान पहुंचाते है। जिससे पौधो की वृध्दि कम होती हौ जिससे उपज में कमी आ जाती है। तथा ये येलो वेन मोजैक वायरस बीमारी को भी फैलाती है।

प्रबंधन

- नीम की खली 250 कि.ग्रा. प्रति हेक्टयेर बीज के अंकुरण के समय एवं बुआई के 30 दिन के बाद नीम बीज के पावडर 4 प्रतिशत या 1 प्रतिशत नीम तेल का छिडकाव करे।
- आरम्भिक अवस्था में रस चूसने वाले किटो से बचाव के लिये बीजों को इमीड़ाक्लोप्रिड या थायामिथोक्सम द्वारा 4 ग्रा. प्रति किलो ग्राम की दर से उपचारित करें।
- कीट का प्रकोप अधिक लगने पर आक्सी मिथाइल डेमेटान 25 प्रतिशत ई.सी. अथवा डायमिथोएट 30 प्रतिशत ई.सी. की 5 मिली मात्रा प्रति लीटर पानी मे अथवा इमिडाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत एस.एल अथवा एसिटामिप्रिड 20 प्रतिशत एस. पी. की 5 मिली./ग्राम मात्रा प्रति 15 लीटर पानी में मिलाकर छिडकाव करें एवं आवश्यकतानुसार छिडकाव को दोहराएं।

4. भिंडी की रेड स्पाइडर माइट

लक्षण: यह माइट पौधो की पत्तियों की निचली सतह पर भारी संख्या में कॉलोनी बनाकर रहता हैं। यह अपने मुखांग से पत्तियों की कोशिकाओं में छिद्र करता हैं । इसके फलस्वरुप जो द्रव निकलता है उसे माइट चूसता हैं। क्षतिग्रस्त पत्तियां पीली पडकर टेढ़ी मेढ़ी हो जाती हैं। अधिक प्रकोप होने पर संपूर्ण पौधा सूख कर नष्ट हो जाता हैं।

प्रबंधन

- इसकी रोकथाम हेतु डाइकोफॉल 5 ईसी. की 2.0 मिली मात्रा प्रति लीटर अथवा घुलनशील गंधक 2.5 ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिडकाव करें एवं आवश्यकतानुसार छिडकाव को दोहराएं।

5. भिंडी फल छेदक

लक्षण:

- लट पत्तियों, टहनियों, फूलों और फूलों की कलियों और फलियों को खाता है।
- लट फलियों के अंदर छेद करके खाता है जिससे फलियों को नुकसान होता है।
- फलों पर बड़े और गोलाकार छिद्र बन जाते है तथा फल सड़ कर समय से पहले गिर जाते है।
- फलों का सड़ना और समय से पहले गिरना
- फलों का बाजार मूल्य कम हो जाता है और वे उपभोग के लिए अनुपयुक्त हो जाते हैं

प्रबंधन

- फेरोमोन ट्रैप @ 12/हेक्टेयर लगाएं।
- प्रभावित फलों का संग्रह और विनाश।
- अंडा परजीवी *ट्राइकोग्रामा चिलोनिस* @ 1.0 लाख/हे कि दर से उपयोग करना।
- 10,000/हेक्टेयर की दर से ग्रीन लेस विंग परभक्षी *क्राइसोपरला कार्निया* के पहले इंस्टार लार्वा का उपयोग करे।
- कार्बेरिल 10% डीपी @ 25 किग्रा / हेक्टेयर या *बेसिलस थुरिंगिएन्सिस* @ 2 ग्राम / लीटर का छिड़काव करें

6. लाल कपास कीट: *डाइस्डरकस सिंगुलातुसी*

नुक़सान: शिशु और वयस्क दोनों फल और पत्तियों के रस का सेवन करते हैं। पत्तियाँ और फल मुड़ सकते हैं, और पौधे कमज़ोर और बौने हो जाते हैं।

प्रबंध

• अंडों को बाहर निकालने के लिए खेत की जुताई करें।

• फॉस्फैमिडोन 40 एसएल 600 मिली/हेक्टेयर का छिड़काव करें।

7. सांवली कपास कीट (*ऑक्सीकेरेनस हाइलिनिपेनिस*)

नुक़सान: अपरिपक्व बीजों का रस निम्फ़ और वयस्कों द्वारा चूसा जाता है, जिससे अपरिपक्व बीज विकसित नहीं हो पाते हैं, अपना रंग खो देते हैं और वजन में हल्के रहते हैं।

प्रबंध

• फॉस्फैमिडोन 40 एसएल 600 मिली/हेक्टेयर का छिड़काव

निष्कर्ष

भिंडी की फसल के महत्वपूर्ण कीटों में प्ररोह और फल छेदक (*एरियास विट्टेला*), फल छेदक (*हेलिकोवर्पा आर्मिगेरा*), लीफहॉपर (*अम्रास्का बिगुतुला बिगुतुला*), सफेद मक्खी (*बेमिसिया तबाई*), सोलेनोप्सिस मैली बग (*फेनाकोकस सोलेनोप्सिस*) और लाल मकड़ी घुन (*टेट्रानाइकस यूर्टिका*) शामिल हैं। आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण हैं और अंकुर से लेकर कटाई के चरण तक फसल के नुकसान के लिए जिम्मेदार हैं। समन्वित कीट प्रबंधन के माध्यम से इन कीटों का प्रबंधन पर्यावरण अनुकूल और किफायती है।